विश्व धरोहर स्थल

भीमबैठका की सैर

जनजागरूकता अभियान

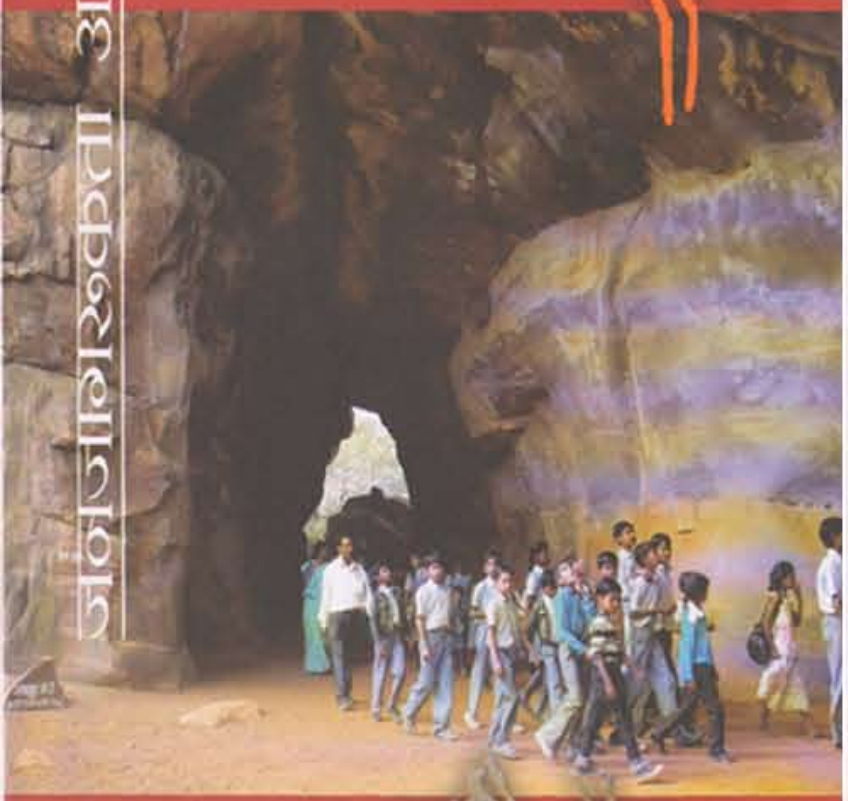

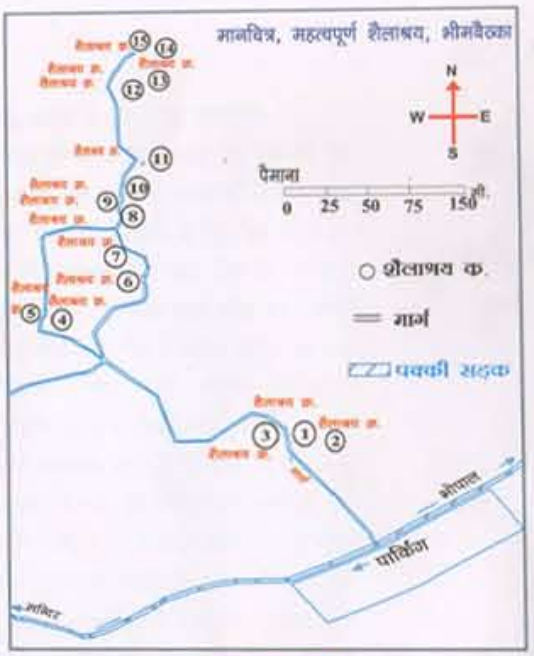

अपील

एतद् द्वारा जन सामान्य को अवगत कराना है कि भारत की संसद से पारित होने के पश्चात् भारत सरकार द्वारा प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष (संशोधन एवं विधिमान्यकरण) अधिनियम 2010, 30 मार्च 2010 को राजपत्र अधिसूचना संख्या 13 द्वारा जारी किया गया है। यह अधिनियम प्राचीन स्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल और अवशेष अधिनियम 1958 का संशोधित रूप है। यह दोनों अधिनियम वेबसाईट www.asi.nic.in पर उपलब्ध हैं। इस अधिनियम का उद्देश्य हमारी विरासत को सुरक्षित एवं संरक्षित रखना है तथा यह राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों के प्रतिषिद्ध क्षेत्र में किसी भी प्रकार का निर्माण चाहे वह लोक परियोजना ही क्यों न हो, न होने देने के सरकार के दृढ़ निश्चय को प्रदर्शित करता है। इस अधिनियम के द्वारा किसी भी केन्द्रीय संरक्षित स्थल अथवा स्मारक की सीमा से चतुर्दिक न्यूनतम 100 मीटर के क्षेत्र को प्रतिषिद्ध क्षेत्र घोषित किया गया है। प्रतिषिद्ध क्षेत्र के परे चतुर्दिक न्यूनतम 200 मीटर के क्षेत्र को विनियमित क्षेत्र माना गया है। अतः अपनी बहुमूल्य धरोहर की सुरक्षा हेतु उपरोक्त अधिनियम के प्रावधानों के कार्यान्वयन में प्रत्येक नागरिक का सक्रिय सहयोग प्रार्थनीय है।

समय :- स्मारक प्रतिदिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक दर्शकों हेतु खुले रहते हैं।

अधीक्षण पुरातत्वविद्
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण
भोपाल मण्डल, जी.टी.बी. काम्पलेक्स, बी–ब्लॉक
द्वितीय तल, टी.टी. नगर, भोपाल – 462003
फोन : 0755.2558250, 2558270 टेलीफेक्स : 0755.2558250
ईमेल : circlebho@gmail.com वेबसाइट : www.asi.nic.in

पुस्तिका के प्रायोजक:-
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल मण्डल, भोपाल

बच्चों एवं युवा पीढ़ी में जिज्ञासा एवं कल्पनाशक्ति जागृत एवं विकसित करने के लिए स्थानीय भाषा में दृष्टांतदरक्ष विवरणिका (ब्रोशर) प्रकाशित एवं प्रचारित करने की अति आवश्यकता है। ये विवरणिकाएं विद्वानों के प्रकाशन एवं प्रचलित कहानियों के मध्य एक सेतु का कार्य करती है।

प्राक्कथन

यह पुस्तिका शैलचित्रों के प्रति जनसामान्य में जागरूकता लाने के उद्देश्य से लिखी गयी है। प्रायः यह देखा गया है कि शैलाश्रयों के निकट बसने वाले लोग शैलचित्रों को चुड़ेल दांत अथवा टोल कह कर पुकारते हैं। उनका यह मानना है कि यहाँ चित्र चुड़ेलों ने बनाये हैं। इस प्रकार की भ्रांतियों के चलते विरासत एवं जनसामान्य

एन. ताहेर
विश्व विरासत स्थल प्रबंधक
18 अप्रैल 2012

Illustrative brochures for children in simple local vernacular need to be brought out and deciminated to create quest and imagination in the younger generation. Such booklet fills the gap between a scholarly publication and story telling.

N.Taher
Site Manager
World Heritage Sites
18th April 2012

का सम्बन्ध विच्छेद हो चुका है। यह सत्य है कि यदि आस-पास रहने वाले लोग ही विरासत के प्रति सचेत नहीं हों तो उनका सही संरक्षण सम्भव नहीं है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शासकीय, गैर शासकीय संस्थाऐं विभिन्न जनजागरूक कार्यक्रमों के माध्यम से भीमबैठका और उसके जैसे अन्य शैलाश्रयों के बारे में जानकारी बाँटने का प्रयास कर रही हैं। इस प्रकार के कार्यक्रमों में निशुल्क वितरण के लिये यह पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। इसके पाठक वे लोग हैं जो शैलाश्रयों के समीप रहते हैं, स्कूल जाने वाले गाँव के बच्चे, शिक्षित युवा, प्रोढ़ तथा महिलाऐं। इसी को दृष्टिगत् रखते हुऐ सभी वैज्ञानिक एवं पुरातात्विक जानकारियों जैसे चित्रों को बनाने का कारण, उसके प्रकार, प्रयुक्त रंग, काल आदि को यथासम्भव सरल शब्दों में कहने का प्रयास किया है। हमारा प्रयास होगा कि यह पुस्तिका अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुंचे।

इस पुस्तक में अनेक विद्वानों द्वारा किये गये शोध को आधार बनाया गया है। अतःउन सभी विद्वानों को हमारी ओर से धन्यवाद। इसके अतिरिक्त भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल मण्डल द्वारा पुस्तिका का प्रकाशन किये जाने के लिये उनको भी हार्दिक आभार। आपके सुझावों की प्रतीक्षा में, पुनः धन्यवाद।

आलेखन
पूजा सक्सेना
पुरातत्वविद्

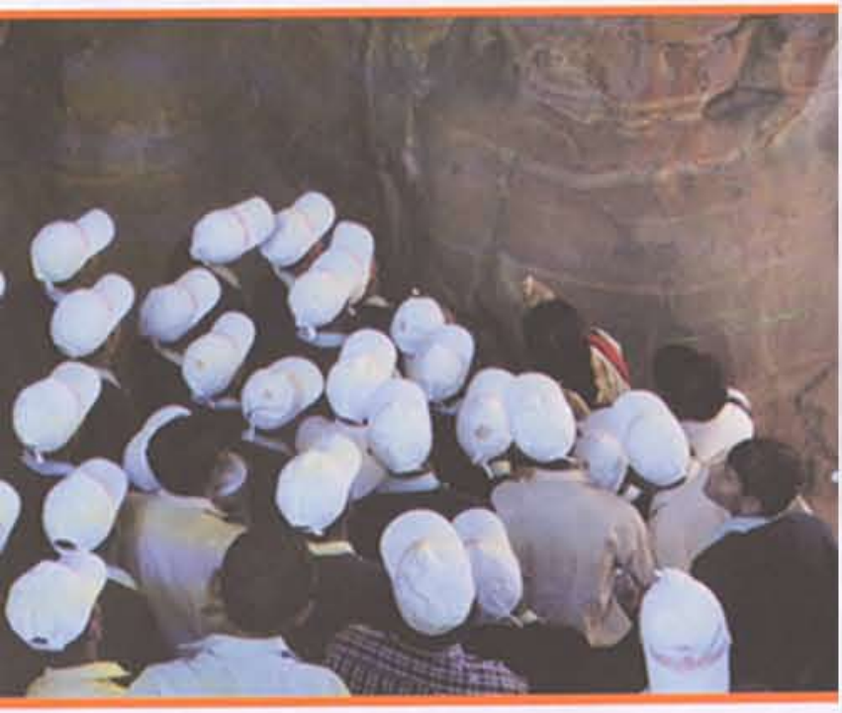

भीमबैठका की सैर

आओ बेटा, आओ। तुम्हारी ही राह देख रहे थे। शिवम के पिताजी ने कहा।
शिवम ने पिताजी के पैर छूते हुए कहा- पिताजी यह मेरा दोस्त है दयाल। शहर में रहता है। भीमबैठका देखना चाहता है, इसलिये मैं साथ ले आया।
क्या कहा भीमबैठका ? तुम्हारा मतलब है पुरेल दौंता? वहाँ नहीं जाना बेटा । बापू ने हिदायत दी।
पुरेल दौंत, ये क्या है? दयाल ने आश्चर्य से पूछा।
शिवम ने कहा- अरे, ये लोग भीमबैठका और उस जैसी गुफाओं को पुरेल दौंत, टोल और न जाने क्या- क्या कहते हैं। ये मानते हैं कि गुफाओं और चट्टानों पर चित्र पुरेलों ने बनाये हैं।
और क्या, उन गुफाओं में पुरेल ही तो रहती हैं। रात को कैसी भयानक आवाजें आती हैं। पिताजी के मुँह पर डर साफ दिख रहा था।

शिवम और उसके दोस्त को देखकर गाँव के बहुत सारे लोग आस-पास आकर बैठ गये थे।

काका, ये जंगल के पेड़ों की सरसराहट और जानवरों की आवाजें भी तो हो सकती हैं। दयाल ने कहा।
हाँ, सियार की सी आवाज आती है। काका ने बताया।
अच्छा, तो ये बताओ कि वहाँ है क्या? दद्दू ने समझदारी की बात की।
दद्दू, वहाँ पुरेल नहीं, हमारे पुरखे रहते थे। दयाल ने बताया।
झुमरू ने चूल्हा फोंकते हुए कहा- गुफाओं और कोटरों में रहते हुए वे सर्दी- गर्मी बरसात से बच जाते होंगे।
अरे झुमरू, तू तो बड़ा समझदार हो गया है। लगता है तेरी घरवाली तुझे पढ़ाती है, शिवम ने कहा।
नहीं भैया, रात वाले स्कूल में पढ़ने जाता हूँ। झुमरू ने शर्माते हुए सच्चाई दी।

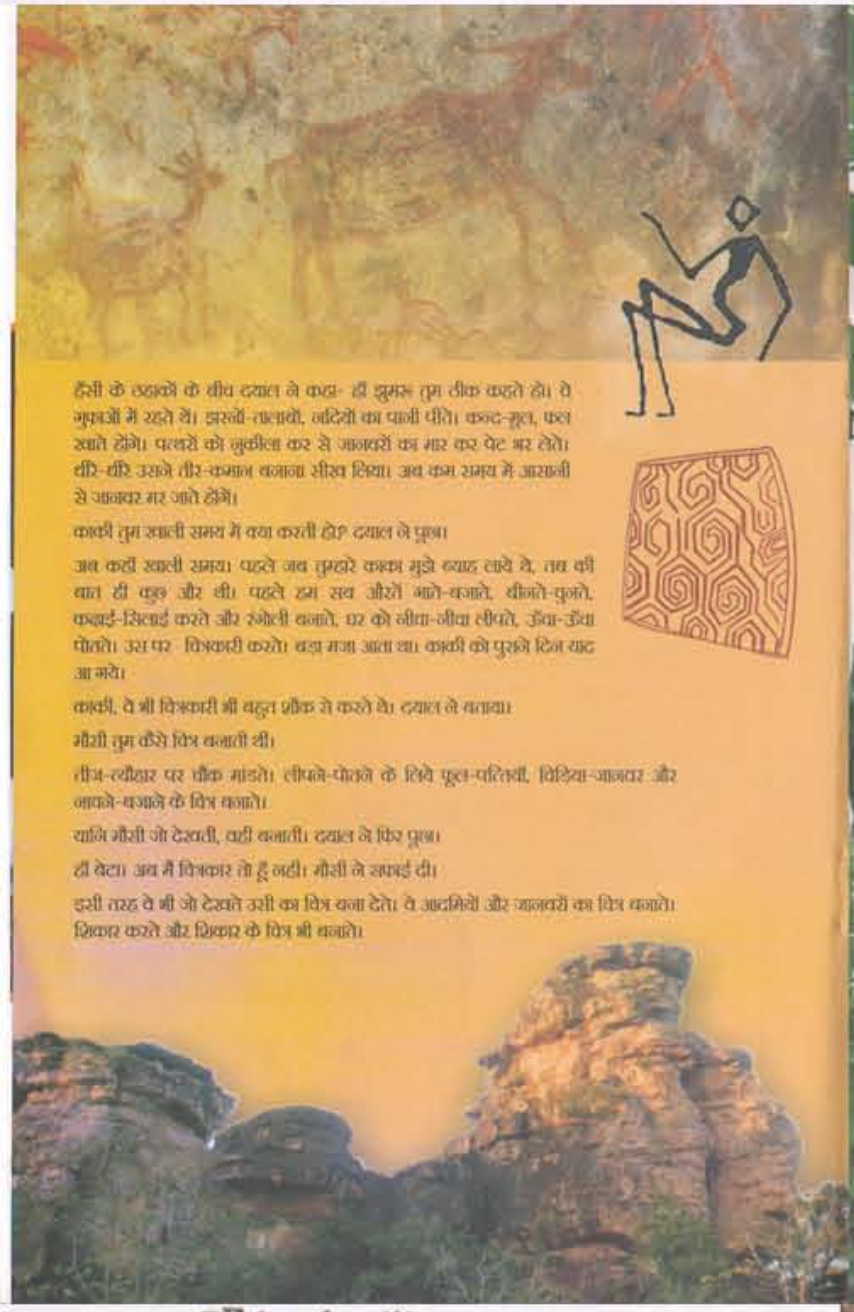

हँसी के ठहाकों के बीच दयाल ने कहा- हाँ झुमरू तुम ठीक कहते हो। वे गुफाओं में रहते थे। झरनों-तालाबों, नदियों का पानी पीते। कन्द-मूल, फल खाते होंगे। पत्थरों को नुकीला कर से जानवरों का मार कर पेट भर लेते। धीरे-धीरे उसने तीर-कमान बनाना सीख लिया। अब कम समय में आसानी से जानवर मर जाते होंगे।

काकी तुम खाली समय में क्या करती हो? दयाल ने पूछा।

अब कहाँ खाली समय। पहले जब तुम्हारे काका मुझे ब्याह लाये थे, तब की बात ही कुछ और थी। पहले हम सब औरतें गाते-बजाते, बीनते-पुनते, कढ़ाई-सिलाई करते और रंगोली बनाते, घर को लीपा-लीपा लीपते, ऊँचा-ऊँचा पोतते। उस पर चित्रकारी करते। बड़ा मजा आता था। काकी को पुराने दिन याद आ गये।

काकी, वे भी चित्रकारी भी बहुत शौक से करते थे। दयाल ने बताया।

मौसी तुम कैसे चित्र बनाती थी।

तीज-त्यौहार पर चौक मांडते। लीपने-पोतने के लिये फूल-पत्तियाँ, चिड़िया-जानवर और नाचने-बजाने के चित्र बनाते।

यानि मौसी जो देखती, वही बनाती। दयाल ने फिर पूछा।

हाँ बेटा। अब मैं चित्रकार तो हूँ नहीं। मौसी ने सफाई दी।

इसी तरह वे भी जो देखते उसी का चित्र बना देते। वे आदमियों और जानवरों का चित्र बनाते। शिकार करते और शिकार के चित्र भी बनाते।

इस चित्र में कोई आदमी तीर कमान से जानवर को मार रहा है।

यहाँ देखो लगता है कोई आदमी घुड़सवारी कर रहा है। यहाँ पर तो दो आदमी तलवार और ढाल लेकर लड़ रहे हैं। काकी ने बताया।

यह चित्र तब बनाये गये होंगे जब राजा भूमि के कारण आपस में लड़ने लगे। ऐसे चित्र आज से तीन हजार साल पहले बनना शुरू हुआ तब से लेकर तीन-चार सौ साल पहले तक इस तरह के चित्र बनते रहे। हो सकता है कि इस तरह की लड़ाई चित्र बनाने वाले ने कहीं देखी होगी। किशन ने काकी को बताया।

तभी मौसी अचानक चीख कर बोली, अरे यहाँ तो खून से एक हाथ बना है। मौसी, क्या शादी-ब्याह में दीवारों और कपड़ों पर गाँव में लोग खून की छाप नहीं लगाते हैं। हो सकता है यह भी इसी कारण से बनाये गये हों। किशन ने आगे कहा- ये लाल रंग के चित्र खून से नहीं बने हैं। ये तो लाल रंग के हेमेटाइट पत्थर को घिस कर बनाये गये हैं। इसी तरह सफेद रंग और हरा रंग भी पत्थर से ही बना है। इसमें पानी मिलाकर उंगली से, डण्डी या बांस को कूटकर बने रेशों से या फिर बालों के गुच्छे से यह रंग किया जाता था। किशन ने चित्र बनाने की विधि बतायी।

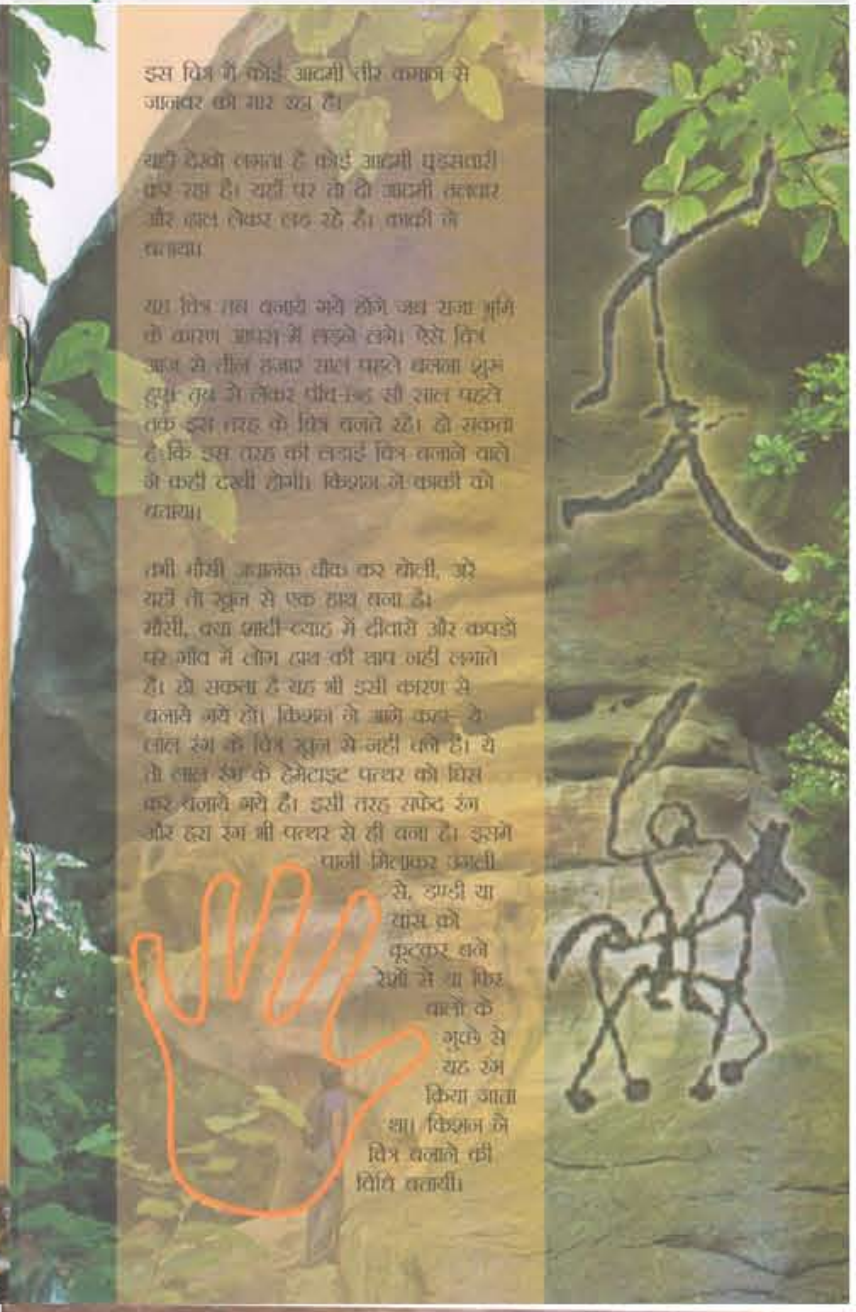

दयाल बेटा, तुम तो कहते थे कि ये चित्र हजारों साल पहले बनाये गये, फिर ये अभी तक मिटे क्यों नहीं? किशन के बाबू ने पूछा।

दयाल ने कहा- ये सारे रंग जो यहाँ लगाये गये हैं, धरती माँ के दिये हुये हैं। ये रंग पत्थर से बने होने के कारण पत्थर की ही तरह सदा रहने वाले हैं।

किशन तुम तो जानते ही हो कि जिस पत्थर पर यह चित्रण किया गया है कई बार यही पत्थर टूट कर गिर जाता है। कई बार पत्थरों की परत भी निकलने से चित्रों को नुकसान पहुंचता है। धूल, हवा और पानी भी चित्रों को नुकसान पहुंचाते हैं। लेकिन इससे ज्यादा नुकसान पहुंचाते हैं हम में से कुछ इन्सान। हम इन पत्थरों और चित्रों को खुरच देते हैं, उन पर कुछ लिख देते हैं और गन्दगी करते हैं, यही सब तो हजारों सालों से सुरक्षित धरोहरों को सबसे ज्यादा हानि पहुँचाते हैं।

सभी चित्रों को देखने में जुट गये। थोड़ी देर बाद सब लौट कर वापस आये।

मौसी और काकी जल्दी-जल्दी बताने लगी इन चित्रों में मोर, बकरी, गाय, बैल, बन्दर, हिरण,

बारहसिंगा और मछली भी बने हैं। कुछ पक्षी भी तो चित्रों में दिखाई देते हैं। किसी-किसी चित्र में आदमियों के झुण्ड नाचते- बजाते दिखायी दे रहे हैं। दीनू ने कहा। बहुत से चित्रों में आदमियों को युद्ध करते, शिकार करते, मछली पकड़ते, मधुमक्खी का छत्ता तोड़ते, तुम्बे से पानी पीते दिखाया गया है। एक शैलचित्र में तो कुछ इंसान डण्डे से लटकाकर एक सूअर को कहीं लिये जा रहे हैं। झुमरू ने झूमकर बताया।

चित्रों की कहानी तो समझ में आ गयी लेकिन इन पहाड़ो के यह सुन्दर आकार और उनमें गुफाऐं, कोटर कैसे बन गये।

काकी, भीमबैठका के पहाड़ बालू पत्थर से बने हैं। लाखों-करोड़ों-साल तक हवा और पानी के बहाव से पत्थर कटता जाता है और कहीं-कहीं से टूट जाता है, झड़ जाता है, उसमें छोटे- बड़े गड्ढे हो जाते है। इस तरह वह आकर्षक आकार के दिखाई देने लगते हैं।

इन सब चित्रों से एक ही बात पता चलती है कि हमारे पुरखे कैसे रहते थे, धीरे-धीरे उन्होंने कैसे अपना विकास किया। यह भी पता लगा कि आज हमारे पास जो इतनी सारी सुविधाऐं हैं वो सब हमारे पुरखों की मेहनत का नतीजा हैं। हमारी आगे आने वाली पीढ़ियां भी यह सब देख सकें, जान सकें इसलिये हमें अपनी धरोहरों को बचा कर रखना है। किशन के पिताजी ने बड़े पते की बात कही।

अब हम यहाँ बिना डरे आ सकते हैं। काका ने कहा। मै भी अपने दोस्तों को रायसेन जिलें में भीमबैठका दिखाने कभी भी ला सकता हूँ। घर चलो, शाम होने आयी है। यहीं रहना है क्या ? दयाल ने पूछा। हाँ, जल्दी करो मौसी, कहीं चुड़ैल आ गयी तो! झुमरू ने मौसी को छेड़ा। सब लोग जोर-जोर से हँसते हुए गाँव की ओर चल दिये।

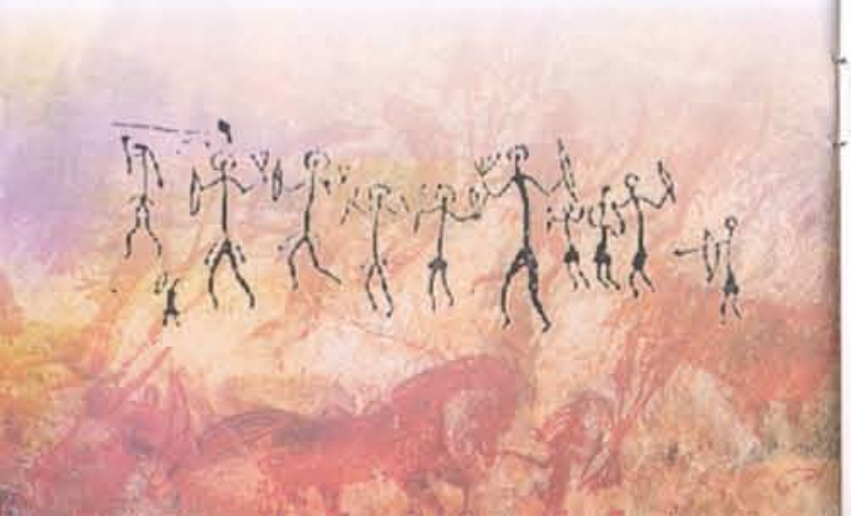

भीमबैठका आदिकाल से मानव की निवास स्थली रही है। यहाँ हुए पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त प्रमाणों से ज्ञात होता है कि मानव ने पूर्व पाषाण काल (100,000 से 40,000 वर्ष पूर्व) से लेकर मध्य काल (आज से लगभग 1,000 वर्ष पूर्व) तक यहाँ शैलाश्रयों में अनवरत् निवास किया। इस लम्बे काल खण्ड के मध्य मानव के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन में अनेक परिवर्तन हुए। यहाँ से प्राप्त सांस्कृतिक अवशेष जैसे पाषाण उपकरण, मृदभाण्ड, शवाधान तथा मुख्यतः शैलचित्र मानव जीवन के विकासक्रम को दर्शाते हैं। इनमें से शैलचित्र मध्याश्म काल से मध्यकाल तक के तत्कालीन जीवन के बारे में जानने का सर्वोत्तम स्त्रोत हैं। प्राकृतिक खनिज रंग मुख्यतः गेरूए तथा सफेद रंग से चित्रित इन शैलचित्रों का विषय मानव तथा पशु आकृतियाँ, समूह चित्र जैसे शिकार, युद्ध तथा सांस्कृतिक चित्रणों में नृत्य एवं वाद्य, तथा दैनिक जीवन के विभिन्न क्रियाकलाप अंकित हैं। भीमबैठका का अनछुआ-सा प्राकृतिक परिवेश, जल, जंगल तथा जीव-जंतु सभी इस क्षेत्र के सौंदर्य तथा महत्व में वृद्धि करते हैं।

यहाँ के महत्व को देखते हुऐ यूनेस्को द्वारा सुनिश्चित सैद्धान्तिक वर्गों में से दो (III तथा V) के अन्तर्गत भीमबैठका के चित्रित शैलाश्रयों को विश्व धरोहर की सूची में सन 2003 में सम्मलित किया गया है।

(III) भीमबैठका मानव तथा पारिस्थितिकी तंत्र के मध्य एक सहसम्बन्ध दिखाता है, जिसे यहाँ के शैलचित्रों में विशाल मात्रा तथा गुणवत्ता में अंकित किया गया है।

(V) भीमबैठका शिकार तथा संग्रहण पर आधारित अर्थव्यवस्था से निकट सम्बन्ध रखता है, जिसकी झलक यहाँ के शैलचित्रकला के अंकन एवं उसकी परिधि में बसे आदिवासी ग्रामों में प्रचलित परम्पराओं में दिखायी देती है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल मण्डल, भोपाल